लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# लेखापरीक्षा अर्चना

**अंक - 16**

**अवधिः जुलाई-2021 से दिसम्बर-2021**

# कार्यालय महालेखाकार

## (लेखापरीक्षा-I)

## राजस्थान, जयपुर

## ‘लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह’ के समापन समारोह के दृश्य

# लेखापरीक्षा अर्चना परिवार

## कार्यालय महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

की हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका

## संरक्षक

**श्री अनादि मिश्र**

महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान

## परामर्शदाता

**श्रीमती मीना कुमारी मीणा**

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

## संपादक मण्डल

### प्रबन्ध सम्पादक

**श्री अरूण कुमार शर्मा**

कल्याण अधिकारी

### संपादक

**श्री वीरेन्द्र सिंह**

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

### सहायक संपादक

**श्री सत्यबीर सिंह**

कनिष्ठ अनुवादक

**श्री जगदीश प्रसाद**

लेखापरीक्षक

www.agraj.cag.gov.in

**आवरण पृष्ठः जयपुर स्थित अमर जवान ज्योति ।**

# संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारी राजभाषा हिंदी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ ही देश के विभिन्न भागों के लोगों में भावनात्मक आदान-प्रदान का जरिया होने के कारण देश की एकता एवं अखण्डता को बढ़ाने में सहायक है।

संघ की राजभाषा-नीति के कार्यान्वयन के प्रति हम सभी का उत्तरदायित्व है। उक्त नीति के अनुरूप हमारी हिंदी पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” का नियमित प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा के प्रति बढ़ते रूझान का द्योतक है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल, सभी रचनाकारों एवं पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्जवल साहित्यिक भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

**(अनादि मिश्र)**
**महालेखाकार**

# संपादकीय

हमारी विभागीय पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” का नवीन 16वां अंक भी सुधि पाठकों को पूर्व अंकों की भाँति यथासमय प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह सम्पादकीय परिवार के सुप्रयासों के अतिरिक्त रचनाकारों के बहुमूल्य योगदान, कार्यालय कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ते रुझान एवं पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण संभव हो पाया है।

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्‌देश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण तथा पत्राचार को प्रर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए। वास्तविकता में हिंदी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि हिंदी जानने वाले तथा हिंदी न जानने वाले कार्मिकों द्‌वारा आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके।

प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय में गत छः माह में होने वाली गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों के साथ - साथ कार्मिकों द्‌वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेखों, कहानियों एवं कविताओं इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्यालय कर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका इस स्तर तक पहुँच पायी है।

आशा है, पाठकों को पत्रिका रूचिकर लगेगी एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह ‘लेखापरीक्षा अर्चना’ को मिलता रहेगा। सम्पादकीय परिवार के प्रयास कितने सफल हैं, इसका निर्णय तो पाठकगण ही करेंगे। लेखापरीक्षा अर्चना की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पाठकों के सुझावों का स्वागत है।

**वीरेन्द्र सिंह**

**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

# अ नु क्र म णि का


| क्र.सं. | विवरण | रचना | रचनाकार | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1. | लेखापरीक्षा की जागरूकता | आलेख | श्री मनोहर लाल मीना | 7 |
| 2. | यूनिकोड इन्स्क्रिप्ट की बोर्ड | आलेख | श्री सत्यबीर सिंह | 12 |
| 3. | कोरोना काल में लोगों का बदलता जीवन | आलेख | सुश्री लवली शर्मा | 14 |
| 4. | अंगदान | कविता | श्री रवि शंकर विजय | 16 |
| 5. | सच्चे मन की प्रार्थना | कहानी | श्री सुनील कुमार अग्रवाल | 17 |
| 6. | गज़ल | गज़ल | श्री रामानन्द शर्मा | 20 |
| 7. | नारी का संघर्ष | कहानी | सुश्री प्रीती शर्मा | 21 |
| 8. | शिल्पकला का बेजोड खजाना 'आभानेरी' | आलेख | डॉ नवल किशोर सेठी | 28 |
| 9. | फिर आयेगी भोर | कविता | श्री वीरेन्द्र सिंह | 33 |
| 10. | 'माँ' तुझे प्रणाम | आलेख | श्री पदम चन्द गाँधी | 34 |
| 11. | अपने - पराये | कहानी | श्रीमती मीना कँवर | 37 |
| 12. | अर्जी | कविता | सुश्री नेहा शर्मा | 40 |
| 13. | कभी तो ना भी कहें | आलेख | श्री राव जितेन्द्र प्रसाद | 41 |
| 14. | प्रतीक्षा | कहानी | सुश्री रूची गुप्ता | 42 |
| 15. | कार्यालयीन गतिविधियाँ | प्रतिवेदन | श्री अरूण कुमार शर्मा | 43 |
| 16. | पाठकों के अभिमत | प्रतिक्रिया | पाठकवृंद | 45 |
| 17. | लेखापरीक्षा शब्दावली | शब्दावली | राजभाषा अनुभाग | 48 |
| 18. | मैं हूँ भाषा हिंदी | कविता | श्री मदन लाल कोली | 49 |



स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर)- इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कवितायें तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

## लेखापरीक्षा की जागरूकता

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग जैसी महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्था में कार्यरत हूँ। यह सर्वविदित है कि इस संस्थान को भारतीय संविधान के अन्तर्गत भारत सरकार/राज्य सरकार द्वारा संधारित लेखों की निष्पक्ष जाँच करने की जिम्मेदारी सौंपकर राजकीय निधि की रक्षा का दायित्व प्रदान किया गया है। इसलिए हम सब मिलकर भारत/राज्यों की संचित निधि से व्यय की गई राशि की विद्यमान नियमों/विनियमों/परिपत्रों/आदेशों एवं निर्धारित की गई नीति के परिपेक्ष्य में निष्पक्षतापूर्ण पारदर्शिता के साथ जाँच के परिणामों से भारत/राज्य सरकार को अवगत कराते हुए संचित निधि से व्यय की गई राशि की रक्षा एक सजग प्रहरी की भांति अदा कर रहे हैं। लेखापरीक्षा को और अधिक जागरूक कैसे बनाया जा सकता है, इस सम्बन्ध में, मैं **अनुपालना लेखापरीक्षा** पर अपने कुछ विचार इस लेख के माध्यम से आप सभी से साझा करने का प्रयास कर रहा हूँ-

**लेखापरीक्षा कार्य योजना**

हमारे पास लेखापरीक्षा हेतु उपलब्ध लेखापरीक्षा इकाइयों के मद्देनजर संसाधन/मैन पावर कम है, ऐसी स्थिति में लेखापरीक्षा का कार्य सम्पादित कराने से पूर्व महालेखाकार कार्यालय के मुख्यालय स्तर पर एक वार्षिक लेखापरीक्षा प्लॉन बनाया जाता है। यह वार्षिक लेखापरीक्षा प्लॉन भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय द्वारा रिस्क एरियाज के सम्बन्ध में जारी किये गये दिशा-निर्देशों की अनुपालना करते हुए बनाया जाना चाहिए ताकि कम से कम संसाधनों/मैन पावर में हम जोखिम पूर्ण इकाइयों का चयन कर लेखापरीक्षा के अधिक से अधिक सार्थक परिणाम प्राप्त कर सकें।

किसी भी यूनिट का लेखापरीक्षा कार्य आवंटित करने से पूर्व मुख्यालय द्वारा लगभग एक माह पूर्व उस लेखापरीक्षा इकाई को यह सूचित कर दिया जाता है कि आगामी माह में अमुक दिनांक के आसपास लेखापरीक्षा दल आपके कार्यालय मे उपस्थित होगा, जो अमुक लेखा अवधि का लेखापरीक्षा कार्य सम्पादित करेगा। यह सूचना प्रत्येक लेखापरीक्षा इकाई को निर्धारित समय में दी जानी चाहिए ताकि लेखापरीक्षा का कार्य निर्धारित अवधि में गुणवत्ता के साथ निष्पादित कराया जा सके।

लेखापरीक्षा इकाई की कार्य प्रणाली के मद्देनजर सामान्यतः एक लेखापरीक्षा दल में तीन से चार अधिकारियों/कर्मचारियों का पदस्थापन कर लेखापरीक्षा दल का गठन किया जाता है। इन अधिकारियों/कर्मचारियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे लेखापरीक्षा दल में आवश्यक

सामंजस्य बनाये रखें तथा टीम एकरूपता के अनुसार लेखापरीक्षा का कार्य सम्पादित करें। जहाँ यह चर्चा करना नितान्त आवश्यक होगा कि लेखापरीक्षा इकाई में लेखापरीक्षा के दौरान यदि किसी नये विषय पर गुणवत्ता का आक्षेप जानकारी में आता है तो कार्य दिवस की समाप्ति के बाद सुबह-शाम उस विषय पर पर्यवेक्षण अधिकारी/दल प्रभारी द्वारा अपनी टीम के सभी साथियों से विस्तृत विचार-विमर्श किया जावे ताकि उस आक्षेप को पुरजोर तरीके से आवश्यक साक्ष्यों के साथ निरीक्षण प्रतिवेदन में गुणवत्ता के आक्षेप के रूप में विकसित किया जा सके। इस प्रकार के आक्षेप को अन्य निरीक्षण दलों के उपयोगार्थ मुख्यालय के माध्यम से व्हाट्सअप ऐप/ई-मेल के द्वारा शेयर किया जाना चाहिए ताकि अन्य इकइयों में भी इस तरह के आक्षेप का गठन किया जा सके।

लेखापरीक्षा दल के प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा की जाती है कि लेखापरीक्षा के दौरान अपना स्वयं का एक फोल्डर हार्ड/सॉफ्ट प्रति में अपने पास रखे तथा वह सुनिश्चित करे कि इस फोल्डर को सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये महत्वपूर्ण पत्र विनियम, आदेश, योजना आदि को सम्बन्धित विभाग की वेबसाइट के माध्यम से अद्यतन कर लिया गया है।

जिस इकाई का लेखापरीक्षा कार्य लेखापरीक्षा दल को सक्षम अधिकारी के अनुमोदन उपरान्त आवंटित किया गया है तथा जिसका लेखापरीक्षा कार्य आगामी 10 दिवस के बाद प्रारम्भ किया जाना है, ऐसी स्थिति में उस दल के सदस्यों का यह दायित्व है कि वे उक्त इकाई की लेखापरीक्षा ज्ञापन संख्या 1 प्रेषित कर उसमें वांछित सूचनाऐं तैयार करने का सम्बन्धित लेखापरीक्षा इकाई से अनुरोध करें ताकि लेखापरीक्षा इकाई में पहुंचने पर उन्हें वांछित सूचनाऐं तैयार मिल सकें। इससे श्रम एवं साध्य की बचत हो सकेगी। यह ज्ञापन उस इकाई के आहरण एवं संवितरण अधिकरी को मेल किया जा सकता है।

लेखापरीक्षा इकाई में पहुंचने के बाद सर्वप्रथम उस इकाई को लेखापरीक्षा हेतु आवृत्त अवधि में कुल कितना बजट आवंटन हुआ है तथा उसके विरूद्ध कितना व्यय हुआ है, इसका अवलोकन बजट कंट्रोल पंजिका/वार्षिक लेखों से किया जाना अपेक्षित है। इसके अलावा उस इकाई की कार्य प्रवृति को समझें तथा तदानुरूप दल के सदस्यों में कार्य का विभाजन करें। लेखापरीक्षा में यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि लेखापरीक्षा के दौरान अधिकतम व्यय राशि से सम्बन्धित अभिलेखों की लेखापरीक्षा कर ली गई है।

उस इकाई के पुराने निरीक्षण प्रतिवेदन/बकाया अनुच्छेदों एवं उसकी कार्य प्रणाली से रूबरू होते हुए लेखापरीक्षा इकाई के आहरण एवं संवितरण अधिकारी से एक प्रारंभिक औपचारिक बैठक की जानी चाहिए। इस बैठक के दौरान इस इकाई के पुराने निरीक्षण प्रतिवेदनों/अनुच्छेदों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। आहरण एवं संवितरण अधिकारी से इस प्रारंभिक औपचारिक बैठक में लेखापरीक्षा का कार्य सुचारू रूप से निष्पादित

हो सके, इसके लिए एक समन्वयक की नियुक्ति लेखापरीक्षा दल के साथ करने का अनुरोध किया जाना चाहिए तथा उस इकाई के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के दूरभाष की सूची भी लेखापरीक्षा दल द्वारा एकत्रित की जानी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी से शीघ्र सम्पर्क किया जा सके। लेखापरीक्षा दल के पर्यवेक्षक अधिकारी/प्रभारी अधिकारी द्वारा संक्षिप्त एवं सारगर्भित बात आहरण एवं संवितरण अधिकारी के समक्ष रखी जानी चाहिए। इस प्रारंभिक बैठक के मिनिट्स निरीक्षण प्रतिवेदन के साथ प्रेषित की जाने वाली टाईटल शीट में इंगित किये जाने चाहिए। यदि आहरण एवं संवितरण अधिकारी जिला कलेक्टर, सम्भागीय आयुक्त, शासन सचिव/प्रमुख शासन सचिव स्तर के हो तथा वहाँ लेखापरीक्षा का कार्य सम्पादित करने बाबत लेखा अभिलेख प्राप्त होने में कठिनाई आ रही है तो ऐसी स्थिति में इन आहरण एवं संवितरण अधिकारियों से बिना किसी संकोच के आवश्यकता के अनुरूप बार-बार मिलना चाहिए। इसके बावजूद भी लेखा अभिलेख प्राप्त नहीं हो रहे हों तो ऐसी स्थिति में यह प्रकरण अर्ध शासकीय पत्र के माध्यम से लेखापरीक्षा दल द्वारा शीघ्र उच्चाधिकारियों (यथा प्रमुख शासन सचिव, वित्त/ समूह अधिकारी) के ध्यान में लाया जाना चाहिए।

यदि एपेक्स इकाई का लेखापरीक्षा कार्य आवंटित किया गया है तथा उसका कार्यालय परिसर बहुत बड़ा है तो ऐसी इकाई का लेखापरीक्षा कार्य प्रारंभ करने से पूर्व इकाई के परिसर का उस इकाई के किसी सक्षम प्राधिकारी के साथ भौतिक रूप से भ्रमण करें, इस भ्रमण के दौरान इकाई के सक्षम प्राधिकारी से प्रत्येक स्थान यथा प्रयोगशालाओं, स्टोर, वर्कशॉप, गार्डन, पुस्तकालय, दुकानें, सरकारी आवास एवं अन्य सरकारी परिसम्पतियों के उपयोग के बारे में आवश्यक चर्चा करनी चाहिए तथा की गई चर्चा को यथा समय रफ शीट में नोट किया जाना चाहिए ताकि इन बिन्दुओं को लेखापरीक्षा के दौरान लेखा अभिलेखों से लिंक किया जा सके।

इन्डैक्स शीट पॉइन्ट की आवश्यक जाँच बाबत अभिलेख/सूचनाऐं उपलब्ध कराने के संबंध में लेखापरीक्षा इकाई को सबसे पहले ज्ञापन जारी करें। उसके बाद मुख्यालय द्वारा प्रेषित सूचक बिन्दु के समर्थन में सम्बन्धित लेखा अभिलेखों की आवश्यक जांच अपेक्षित है तथा आवश्यक हो तो उस निर्माण कार्य स्थल का छायाचित्र भी प्रेषित करें, साथ ही विभाग के किसी अधिकारी/कर्मचारी के साथ निर्माण कार्य स्थल का संयुक्त भौतिक सत्यापन कर रिपोर्ट भी मुख्यालय को प्रेषित करें।

उसके पश्चात निरीक्षण प्रतिवेदन में टिप्पणी अंकित करें और यदि लेखापरीक्षा प्रत्युत्तर से सन्तुष्ट नहीं हैं, तो विभाग को पुनः ज्ञापन जारी करें। तत्पश्चात आक्षेप गठित करें और वांछित समस्त कुंजी दस्तावेज मय भौतिक सत्यापन रिपोर्ट सूचक बिन्दु के समर्थन में निरीक्षण प्रतिवेदन पत्रावली के साथ सलंग्न करें।

चयनित माह की विस्तृत लेखापरीक्षा पूर्ण ईमानदारी के साथ इकाई द्वारा जिस मद पर अधिकतम व्यय किया गया है उनको चिन्हित कर आवश्यक जॉच की जानी चाहिए। पुराने निरीक्षण प्रतिवेदन के आक्षेपों को नए निरीक्षण प्रतिवेदन में अद्यतन किया जा रहा है लेकिन पुराने निरीक्षण प्रतिवेदन के आक्षेप की संख्या किस वर्ष से सम्बन्धित है, को लिंक कर निर्णित नहीं किया जा रहा है। परिणामस्वरूप एक ही आक्षेप दो-दो निरीक्षण प्रतिवेदन में लम्बित हो जाता है अतः इस ओर ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

बंद/मृतप्रायः योजनाओं की अवशेष राशि का आवश्यक विश्लेषण अवलोकन नहीं किया जा रहा है, अर्थात योजनाएं कब से बंद/मृतप्राय हैं, उसके आदेश की प्रति संलग्न किया जाना अपेक्षित है। बंद एवं मृतप्रायः योजनाओं की राशि समर्पित करने हेतु विभाग द्वारा क्या कार्यवाही की जा रही है, क्या इन योजनाओं के दायित्व बकाया हैं जिनका भुगतान किया जाना बाकी है आदि। इस पर विभाग का प्रत्युत्तर भी नहीं लिया जाता है। अतः बंद एवं मृतप्रायः योजनाओं के सम्बन्ध में निरीक्षण प्रतिवेदन में आक्षेप गठन करने से पूर्व इस योजनाओं का आवश्यक विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है।

योजना मद में बजट आवंटन से अधिक अनियमित व्यय पर आक्षेप गठित किया जाना है लेकिन आक्षेप में कुछ राशि ऐसी होती है जिसे पूर्व वर्ष में ही पैरा में सम्मिलित कर लिया गया है। अतः निरीक्षण प्रतिवेदन में आक्षेप गठित करते समय पूर्व में इसी योजना पर आक्षेप गठित किया गया है तो दल द्वारा इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

लेखापरीक्षा दल द्वारा गठित आक्षेप के प्राधिकार के समर्थन में नियम/दिशा-निर्देश इत्यादि संलग्न नहीं होते हैं। परिणामस्वरूप आक्षेप में गलत प्राधिकार के सन्दर्भ होने की संभावना बनी रहती है। अतः प्रत्येक अनुच्छेद के साथ नियम/दिशा-निर्देशों की प्रति संलग्न किया जाना अपेक्षित है।

टाईटल शीट के कॉलम की सही पूर्ति नहीं की जा रही है। जिसकी आपूर्ति का ध्यान रखा जाना चाहिए।

तथ्यात्मक विवरण के समस्त वांछित कुंजी दस्तावेज संलग्न कर तथ्यात्मक विवरण पर सन्दर्भ अंकित कर मुख्यालय को प्रेषित किये जाने चाहिएं। लेखापरीक्षा द्वारा विभागीय प्रत्युत्तर को स्वीकार नहीं करने के समर्थन में आवश्यक साक्ष्यों प्राधिकार के साथ स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है।

लेखापरीक्षा दल के पर्यवेक्षण/प्रभारी अधिकारी का यह भौतिक दायित्व है कि वह अपनी टीम के प्रत्येक सदस्य को आवंटित कार्य का गुणवत्ता के साथ अच्छे निष्पादन बाबत उनका समय-समय पर मार्ग दर्शन करे तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों की बार-बार सराहना कर उन्हें ओर अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे। एक लेखापरीक्षक का यह नैतिक दायित्व

है कि किसी भी प्रकार की लेखापरीक्षा इकाई की लेखापरीक्षा के दौरान उसका आचरण मर्यादित होना चाहिए तथा लेखापरीक्षा के समय उसका दिमाग, हाथ, ऑख, कान, तथा मुंह  पांचों एक साथ काम करते रहना चाहिए ताकि लेखापरीक्षा का परिणाम गुणवत्ता के साथ प्राप्त किया जा सके ।

निरीक्षण प्रतिवेदन को अन्तिम रूप दिये जाते समय उसमें सम्मिलित किये गये प्रत्येक आक्षेप को निरीक्षण दल के प्रत्येक सदस्य द्वारा पढा जाना चाहिए ताकि निरीक्षण प्रतिवेदन की ड्राफ्टिंग मे यथा समय आवश्यक सुधार किया जा सके। मुख्यालय पर वैटिंग के उपरान्त लेखापरीक्षा इकाई को जारी किये गये प्रत्येक निरीक्षण प्रतिवेदन को लेखापरीक्षा दल के प्रत्येक सदस्य द्वारा पुनः देखा जाना चाहिए ताकि वैटिंग के दौरान उनकी ड्राफ्टिंग में रही कमियों में मुख्यालय द्वारा जो सुधार किया गया है उसकी पुनरावृत्ति को रोका जा सके।

**मनोहर लाल मीना**
**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**

***हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करते रहेंगे।***

## यूनिकोड इनस्क्रिप्ट की बोर्ड

आजकल कार्यालय में सबसे ज्यादा प्रचलन में रहने वाला शब्द यूनिकोड है और कार्मिकों में अक्सर यह चर्चा रहती है कि आखिर यूनिकोड होता क्या है। यूनिकोड को लेकर कार्मिकों के मन में एक भ्रम की स्थिति बनी रहती है। कुछ लोग इसे मंगल फॉन्ट का नाम देते हैं तो कुछेक इसे कम्प्यूटर का कोर्स बताते हैं। यूनिकोड पर चर्चा करने से पहले यह समझना जरुरी है कि यह होता क्या है और इसे यह नाम क्यों दिया गया है ?

यूनिकोड का शाब्दिक अर्थ है यूनिवर्सल कोड। यह एक तरह की कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण करने की प्रणाली है और यह इस आधार पर कार्य करती है कि जिन भाषाओं की लिपि हिंदी के समान है उन भाषाओं को लिखने के लिए कम्प्यूटर के कुंजी पटल पर उसी कुंजी का प्रयोग किया जाएगा जिस कुंजी का प्रयोग हिंदी टाइप करने में किया जाएगा। अन्य शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि यदि हिंदी भाषा में 'क' लिखने के लिए 'k' का प्रयोग किया जाता है तो यूनिकोड प्रणाली में अन्य किसी भी भाषा, जिसकी लिपि हिंदी के समान है, 'क' लिखने के लिए 'k' का ही प्रयोग किया जाएगा। यदि प्रत्येक भारतीय भाषा की लिपि के लिए अलग-अलग कुंजीपटल होंगे तो एक व्यक्ति के लिए प्रत्येक भाषा में टंकण कार्य करने के लिए अलग-अलग कुंजीपटल याद करने होंगे जो कि एक मुश्किल कार्य है।

इसमें प्रयोग किए जाने वाले कुंजीपटल को इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल का नाम दिया गया है। इस कुंजीपटल पर किसी भी भारतीय भाषा की लिपि में टंकण कार्य करना उतना ही सरल है जितना अंग्रेजी में। इसका कारण यह है कि यह कुंजीपटल भारतीय लिपियों के वर्णाक्षरों की वैज्ञानिक और ध्यवनात्मक प्रकृति का प्रयोग करता है। अंग्रेजी कुंजीपटल की तुलना में इसे सीखना भी अधिक सरल है। इस कुंजीपटल का प्रयोग जिस्ट ( GraphIcs and IntellIgence based ScrIpt Technology) कार्ड और टर्मिनल्स के साथ शुरु हुआ था। 1983 में इलैक्ट्रोनिक विभाग, भारत सरकार के अनुदान पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर (IIT, Kanpur) में जिस्ट तकनीक प्रारंभ हुई थी। 1986 में इस तकनीक का व्यावसायीकरण किया गया और इलैक्ट्रोनिक विभाग ने इनस्क्रिप्ट कुंजी को प्रारंभ किया। तभी से पूरे देश में विभिन्न भाषाओं में विभिन्न कार्यों के लिए इस कुंजीपटल का प्रयोग किया जाता रहा है। भारतीय मानक ब्यूरो ने 1991 में इस्की (ISCII- IndIan ScrIpt Code For InformatIon Inter change) कोड के अन्तर्गत इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल का मानकीकरण कर दिया है और सभी इलैक्ट्रोनिक तथा संचार माध्यमों में इसका प्रयोग अनिवार्य है।

यूनिकोड को कम्प्यूटर पर सक्रिय करने के लिए किसी विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर की जरुरत नहीं होती है। यह प्रत्येक कम्प्यूटर में इनबिल्ट होता है। विंडो 8 में एवं विंडो 10 में इसे

सक्रिय करने की प्रक्रिया इस प्रकार से हैः-

Settings बटन पर जाएं एवं Control Panel खोलें तथा Language Option के Change Your Language Preferences में Add a Language Tab पर क्लिक करें। अब आपके सामने विभिन्न भाषाओं के बॉक्स खुलेंगे, इसमें हिंदी पर क्लिक करें। हिंदी के सामने Options पर क्लिक कर Add an Input Method बटन पर क्लिक कर Devnagari-Inscript Keyboard का चयन करें।

इसे प्रयोग करने के लिए किसी भी Application को शुरु करें। Status Bar में दाईं ओर English और Hindi में आप अपनी जरुरत की भाषा का चयन कर सकते हैं और निर्बाध रुप से हिंदी एवं अंग्रेजी में कार्य कर सकते हैं।

इस कुंजीपटल का प्रयोग करने से आपको परंपरागत फोंट के झंझट से निजात मिलती है। इसमें किए हुए टंकण कार्य को एक जगह से दूसरी जगह लेकर जाने में किसी प्रकार की समस्या नहीं होती है और भाषा में किसी प्रकार की विकृति नहीं आती है। अगर फाइलों के आदान- प्रदान में किसी प्रकार की विकृति आती है तो उसे Ltr Run के माध्यम से ठीक किया जा सकता है।

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रुप में कम्प्यूटर से जुड़ा हुआ है और प्रत्येक को कुंजीपटल साक्षर होना आवश्यक है। यदि कम्प्यूटर के कुंजीपटल पर इन भाषाओं की लिपियों को सहजता से टाइप नहीं किया जा सकेगा तो आने वाले समय में ये विलुप्त हो जाएंगी। इन्स्क्रिप्ट कुंजीपटल यह आश्वासन दिलाता है कि सूचना क्रांति के इस युग में अंग्रेजी के साथ ही भारतीय भाषाएं और उनकी लिपियाँ भी उसी शान और गरिमा के साथ बनी रहेंगी। आप सभी के अभ्यास एवं उपयोग हेतु इन्स्क्रिप्ट की बोर्ड का ले-आउट दिया जा रहा हैः-

**सत्यबीर सिंह**

**कनिष्ठ अनुवादक**

# कोरोनाकाल में लोगों का बदलता जीवन

कोरोना नामक इस छोटे से वायरस ने बहुत बडी जिंदगी बहुत छोटी सी कर दी। इस लगातार बढती हुई वैश्विक महामारी ने जैसे उड़ते हुये बच्चों के पंख काट दिये हैं। बच्चों का पूरा भविष्य घर और मोबाइल तक ही सीमित रह गया है। इस महामारी में न जाने कितने बच्चे अनाथ हो गये और न जाने कितने माता-पिता ने अपने बच्चे खो दिया, लेकिन इस महामारी में सबसे ज्यादा चिंता का विषय है हमारी नई पीढ़ी का भविष्य, क्योंकि जब से बच्चों का स्कूल जाना बन्द हुआ है और ऑनलाइन क्लास शुरू हुई हैं, वह सिर्फ औपचारिकता मात्र है क्योंकि जब हमारे बच्चे स्कूल जाते हैं तो एक अनुशासन सीखते हैं। वहां के वातावरण में घुलते-मिलते हैं, वहां उनका मानसिक के साथ - साथ शारीरिक विकास भी होता है। जो घर में ऑनलाइन क्लास में सम्भव नहीं है। यह एक ऐसा वायरस है जो ऊँची - ऊँची इमारतों में रहने वालों के साथ प्लेन से सफर कर हमारे देश में आया और बस्तियों में रहने वाले करोड़ों लोगों के साथ ही सड़कों पर बेघरों की जिन्दगी जीने वाले, कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक बेचकर गुजारा करने वाले और कामगार फेरीवालों के आंसुओं और भुखमरी का कारण बना। इस समय सरकार द्वारा लिया गया निर्णय लॉकडाउन लगाना हम सब के लिए कुछ सही भी रहा और नहीं भी। महामारी का सबसे ज्यादा असर पर्यटन उद्योग पर भी पड़ा। वायरस संक्रमण के चलते लगे लॉकडाउन से लोग अपने घरों में कैद रहे जिससे पर्यटक स्थल सूने हो गये और अभी भी लोग घरों से बाहर निकलने में घबरा रहे हैं। कोरोना से लोगों के जीवन में व्यापक बदलाव आये हैं। इस बीमारी ने हमारे निजी जीवन पर ही नहीं बल्कि हमारे रिश्तों पर भी प्रभाव डाला है। अपने अपनों को ही मरते समय न देख पाये न ही उन्हें कंधा दे पाये, कोरोना ने हमारी सामाजिकता पर भी प्रहार किया है। हमारी आपसी-समझदारी को भी चोटिल किया है। तकरीबन डेढ़ साल से ज्यादा का समय हो गया है जब ना त्योहारों में मिल पाए है और ना किसी के गम में शरीक हो पाये है। ऑक्सीजन के सहारे टिकी अनगिनत सांसे और कोरोना के शिकार हुए लोगों की लाशों के अम्बार के बीच हमें इस वैश्विक महामारी का विनाशकारी प्रभाव देखने को मिला है। महामारी से बचने के लिए बनाई गई सामाजिक दूरियों ने न केवल मित्रों और रिश्तेदारों को दूर कर दिया बल्कि माता-पिता और पुत्र-पुत्रियों के बीच तथा भाई बहनों के बीच भी खौफ तथा अलगाव की दीवार खड़ी कर दी है।

असीमित विश्व की सीमाएं सिमट कर हमारे दरवाजे तक आ गई। इस अलगाव के कारण मानवता उस दिशा में बढ़ रही है जहां पर सीमाएं हमारे घरो तक रह गई। इंसानो की प्रकृति बीमारों के नजदीक जाने और दया प्रकट करने की रही है, लेकिन इस कोरोना वायरस ने इंसानो की इस सबसे अच्छी प्रवृत्ति पर भी हमला कर दिया है। सनातन धर्म के 16 संस्कारो में से दाह संस्कार को अंतिम संस्कार माना जाता है और अन्य संस्कारों को चाहे कोई माने या ना माने मगर इस संस्कार के बिना शवदाह करने को अधोगति माना जाता है। कुछ लोग अस्पताल में अपने माता-पिता के शव लावारिश छोडकर भाग गये। महामारी ने मनुष्य को एकांगी होने को मजबूर कर दिया है। ईसा पूर्व यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने सही कहा था कि मुनष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए जब भी यह संकट दूर होगा तब लोगों को सामाजिक जुड़ाव की जरूरत ज्यादा महसूस होगी। कोरोना वायरस संक्रमण ने आज हम लोगो को जिंदगी के बहुत कटु सबक सीखने पर मजबूर कर दिया है।

**लवली शर्मा**
**अतिथि रचनाकार**

- छोटी छोटी टिप्पणियां हिन्दी में लिखने का प्रयास करें।
- अच्छे शब्दों के लिए अटके नहीं।
- आम शब्दों का प्रयोग करें।
- वैज्ञानिक, तकनीकी एवं कार्यालयीन शब्दावली का प्रयोग करें।
- अशुद्धियों से घबराइये नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब प्रारम्भ करें।
- हिन्दी में हस्ताक्षर करें।
- रजिस्टरों, सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में करें।
- फाइलों के ऊपर विषय हिन्दी-अंग्रेजी (द्विभाषा) में लिखें।
- हिन्दी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखें।
- कोड़ मैनुअल द्विभाषी रुप में बनवाएं।
- हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में देवें।
- अपने साथियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा देवें।
- हिन्दी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का भरपूर फायदा उठायें।
- सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय कर हिन्दी में लिखने का प्रयास करें।

## अंगदान

**सर्वमान्य है अमर आत्मा, दफन सिर्फ होते मुर्दे हैं**

**तो क्यूं जलती लाशों के संग, हदय आंख और गुर्दे हैं।**

**बिना आँख और गुर्दों के, कुछ लोग यहां मर जाते हैं**

**कुछ अपना अंग दान कर, जीवन अमर कर जाते हैं।**

**गर प्राण दे गए मर कर भी हम, किसी और इंसान को**

**राजा बलि के दान से भी, बढ़कर मानो इस दान को।**

**हम सभी को मिल कर अब प्रखर चेतना लानी है**

**जो शिकार गलत भ्रांतियों के, उनको बात बतानी है।**

**इक खासियत है बहुत बडी, तन के अंग दान में**

**मर कर भी जिन्दा रहते हम, किसी ओर इंसान में।**

**रवि शंकर विजय**
**सहायक पर्यवेक्षक**

राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के तहत (i) केन्द्र सरकार आदि के संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्तियाँ (ii) संसद के सदनों में रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात (iii) केन्द्र सरकार आदि की संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, सूचना, निविदा प्रपत्र हिन्दी और अंग्रेजी में जारी किए जाने हैं।

# सच्चे मन की प्रार्थना

राधेश्याम ने एक मेडिकल स्टोर खोल रखी थी। दस साल का अनुभव होने के कारण उसे अच्छी तरह पता था कि कौनसी दवाई कहां रखी है। वह व्यवसाय को सावधानी और बहुत निष्ठा से करता था। वह ग्राहकों को वांछित दवाईयों को सावधानी और समझदारी से देता था।

परन्तु उसे ईश्वर पर कोई भरोसा नहीं था। वह मानता था कि प्राणी मात्र की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है। वह जरूरतमंद लोगों को मुफ्त में दवा भी दिया करता था।

वह मनोरंजन के लिए दुकान में दोस्तों के साथ कैरम खेलता था। एक दिन अचानक बारिश होने लगी जिसकी वजह से दुकान में कोई भी ग्राहक नहीं आया, बस फिर क्या, दोस्तों को बुलाकर कैरम खेलने लगा।

तभी एक छोटा बच्चा उसकी दुकान में पर्चा लेकर आया। उसका शरीर पूरा भीगा हुआ था।

राधेश्याम खेल में इतना व्यस्त था कि उसकी नजर उस बच्चे पर नहीं पड़ी।

ठंड से ठिठुरते हुए बच्चे ने कहा कि मुझे ये दवाईयाँ चाहिए। मेरी मां बहुत बीमार है, उन्हे बचा लीजिए। बारिश की वजह से सभी दुकाने बंद हैं। आपकी दुकान खुली देखकर मुझे विश्वास हो गया कि अब मेरी मां बच जाएगी।

उस बच्चे की आवाज सुनकर कैरम खेलते-खेलते राधेश्याम ने पर्चे को हाथ में लिया और दवाई देने को उठा। खेल में व्यवधान के कारण अधूरे मन से दवाई देने के लिए उठा ही लिया था कि बिजली चली गयी। अपने अनुभव से अंधेरे में ही दवा की शीशी झट से निकाल कर बच्चे को दे दी। दवा के रूपये देकर बच्चा खुशी-खुशी चला गया। अंधेरा होने के कारण खेल बंद हो गया और दोस्त चले गये।

अब वह दुकान बंद करने की सोच ही रहा था कि तभी लाईट आ गई और वह यह देखकर दंग रह गया कि उसने दवाई समझकर उस बच्चे को चूहे मारने वाली दवा की शीशी दे दी। जिसे उसके किसी ग्राहक ने थोड़ी ही देर पहले लौटाया था और कैरम खेलने की धुन में उसने अन्य दवाईयों के बीच यह सोचकर रख दिया था कि खेल समाप्त करने के बाद फिर उसे अपनी जगह वापस रख देगा।

उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा कि मानों उसकी दस साल की विश्वसनीयता पर ग्रहण लग गया।

यदि उसने दवाई अपनी बीमार माँ को पिला दी तो वह अवश्य मर जाएगी। बच्चा छोटा होने के कारण दवाई को पढ़ना नहीं जानता होगा।

एक पल वह अपने कैरम खेलने के शोक को कोसने लगा और दुकान में खेलने को छोड़ने का निश्चय कर लिया।

पर यह बात तो बाद में देखी जायेगी, अब गलत दी गयी दवा का क्या किया जाये।

बच्चे का पता भी नहीं जानता, कैसे उस बीमार मां को बचाया जाए।

सच कितना विश्वास था उस बच्चे की आँखों में। राधेश्याम को कुछ समझ नहीं आ रहा था। घर जाने की इच्छा ठंडी पड गई । दुविधा, बैचेनी व घबराहट में वह इधर-उधर देखने लगा।

पहली बार श्रद्धा से उसकी दृष्टि दीवार के उस कोने पर पड़ी जहां उसके पिता ने जिद करके श्री बांके बिहारी भगवान का छोटा-सा चित्र दुकान के उद्घाटन के वक्त लगा दिया था। पिता से हुई बहस में एक दिन उन्होंने राधेश्याम से बांके बिहारी को कम से कम शक्ति के रूप में मानने और पूजने की मिन्नत की थी।

पिता ने कहा था कि ईश्वर की भक्ति में बड़ी शक्ति होती है। श्री बांके बिहारी जी में हर बिगड़े काम को ठीक करने की शक्ति है। राधेश्याम को यह सारी बातें याद आने लगी । उसने पिता को ईश्वर के सामने हाथ जोड़कर कुछ बोलते हुए देखा था।

उसने भी आज पहली बार दुकान के कोने में धुल भरी श्री बांके बिहारी जी की तस्वीर को देखा और आंखे बंद कर दोनों हाथ जोड़कर वहीं खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद वह छोटा बच्चा फिर दुकान में आया। राधेश्याम बहुत अधीर हो गया। कहीं बच्चे ने दवा समझ कर जहर अपनी माँ को पिला तो नहीं दिया, इसकी मां मर तो नहीं गई।

राधेश्याम का रोम-रोम कांप उठा। पसीना पोछते हुए धीरे से कहा, क्या बात है बच्चे अब तुम्हें क्या चाहिए ?

बच्चे की आँखों से पानी छलकने लगा। उसने रूकते-रूकते कहा, “मैं मां को बचाने के लिए दवा की शीशी लिए भागे जा रहा था, घर के पास पहुंचा ही था कि बारिश की वजह से आँगन में पानी भरा था और मैं फिसल गया जिससे दवा की शीशी टूट गयी। क्या आप मुझे दवाई की दूसरी शीशी दे सकते हैं।”

राधेश्याम हक्का - बक्का रह गया। क्या ये सचमुच श्री बांके बिहारी जी का चमत्कार है। हां-हां क्यों नहीं, राधेश्याम ने चैन की सांस लेते हुए कहा, “लो, ये दवाई।” पर मेरे पास पैसे नहीं है। उस बच्चे ने हिचकिचाते हुए कहा ।

कोई बात नहीं, तुम यह दवाई ले जाओ और अपनी मां को बचाओ। जाओ जल्दी करो और हां अबकी बार जरा सम्भल कर जाना।

बच्चा खुशी से चल पड़ा। राधेश्याम की आँखों से अविरल आंसुओं की धारा बह निकली। श्री बांके बिहारी जी को धन्यवाद देता हुआ उस तस्वीर को अपनी छाती से पोंछता हुए अपने माथे से लगा लिया।

आज के चमत्कार को वह अपने परिवार को सुनाना चाहता था।

जल्दी से दुकान बंद करके घर चला गया। उसकी ईश्वर में विश्वास न करने की सोच अब बीत चुकी थी और अगले दिन की नई सुबह एक नए राधेश्याम की प्रतीक्षा कर रही थी।

**सुनील कुमार अग्रवाल**
**वरिष्ठ लेखापरीक्षक**

## रचनाकारों से अनुरोध

**विभाग से संबंधित एवं अन्य विषयों पर प्रकाशन सामग्री एवं प्रतिक्रियाएँ राजभाषा अनुभाग में व्यक्तिशः, डाक द्वारा अथवा ई-मेल पते singhv.raj.sca@cag.gov.in पर प्रेषित की जा सकती हैं। रचनाएँ हस्तलिखित/ यूनीकोड में टंकित एवं छाया चित्र स्कैन कर हार्ड/सॉफ्ट प्रति में मौलिकता एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ प्रेषित की जानी अपेक्षित हैं।**

## गज़ल

बेहतर है कि आप मुझे कुछ अपशब्द कहें।

मुखर हो जायें कि आप कुछ स्तब्ध रहें।।

गुजरोगे इस अहसास से कभी आप भी।

बेहतर है सुनायें आपबीती, कुछ भाव शब्द कहें।।

श्मशान के रास्ते होंगे सभी कुछ वीरान भी।

फूलों को बिखेर कर न ये रास्ते अवरूद्‌ध करें।।

समेटोगे कहां तक अपने कर्मों की जागीर को।

जो प्राप्त हो सम्पदा अपनी, उसे अब प्रारब्ध कहें।।

यह तो तय है कि त्यागना पड़ेगा विश्व को।

यह मुमकिन ही नहीं है कि आप उपलब्ध रहें।।

गूँज जायेगा गगन भी खगों के कलख से।

विस्तार के भय से शायद पक्षी कुछ निस्तब्ध म्हें।।

गुम हो जायेगा नाम भी अपना इन अंधेरो में।

प्रेम की वर्षा करें, चाहे आप हमसे विरूद्‌ध रहें।।

**रामानन्द शर्मा**

**(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक**

# नारी का संघर्ष

यह सीमा नाम की एक लड़की की कहानी है। सीमा अपने भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। सीमा की माँ हमेशा बीमार रहती थी। घर का काम ज्यादातर सीमा को ही करना पड़ता था। एक दिन सीमा की माँ ने इस दुनिया से विदा ले ली। माँ के जाने के बाद घर और अपने भाई बहन की जिम्मेदारी अब सीमा पर आ गई। जब सीमा सोलह बरस की हुई तो पिता ने उसकी शादी कर दी। हर लड़की की तरह सीमा ने खुशी-खशी अपने नये जीवन में प्रवेश किया, सीमा सोचने लगी कि अब सास ही मेरी माँ है। विवाह को कुछ ही दिन हुए थे कि अचानक से सास के व्यवहार में बदलाव आ गया। सास के तानों और अत्याचार को सीमा यह सोचकर सहती रही कि एक दिन उसकी जिंदगी में भी वो समय आयेगा जब सब कुछ ठीक हो जायेगा। कुछ समय बाद सीमा ने एक बेटी को जन्म दिया। बेटी की जन्म की बात सुनकर सास को बहुत दुःख हुआ। सास ने फिर से सीमा को बहुत कुछ सुनाया। सीमा की सास इस बात से पहले ही नाराज थी कि वह दहेज में कुछ नहीं लाई है, पर सीमा क्या करती, वह तो एक गरीब परिवार से थी। सीमा रात भर सो भी नहीं पाई, यहीं सोचती रही कि आखिर वो क्या करे। रात का समय था, सीमा पानी लेने के लिए उठी, तभी उसे किसी के बात करने की आवाज आई। उसने देखा कि उसकी सास उसके पति के साथ मिलकर उसे जहर देकर मारने की कोशिश करना चाहती है। कोई ओर कहता तो शायद वह इसे झूठ भी मान लेती, लेकिन स्वंय अपनी आँखों से देखने पर वह इस बात को झूठा कैसे मान लेती। सीमा चुपचाप अपने कमरे में आ गई और सुबह होने का इंतजार करने लगी। सुबह होने पर उसने अपने चाचाजी को एक पत्र लिखा और चुपचाप अपनी पडोसन को दे दिया। एक दिन बाद ही उसके चाचाजी आ गये। सीमा अपनी बेटी को लेकर अपने चाचाजी के साथ अपने मायके आ गई। अपनी और अपनी बेटी की जान तो उसने बचा ली, लेकिन आगे क्या?

एक लडकी के लिए शादी के बाद मायके का जीवन आसान नहीं होता। क्योंकि हम जिस समाज में रहते हैं, उस समाज में दोषी केवल लड़कियों को ही समझा जाता है। सीमा के लिए यह राह आसान नहीं थी। सीमा ने कपडे सिलना शुरू किया, इससे जो भी पैसे मिलते, उससे वह अपना जीवन यापन करने लगी।

पिता के लिए यह सब देखना आसान नहीं था। तभी सीमा के चाचाजी सीमा के लिए दुबारा विवाह करने का प्रस्ताव लाए। उन्होंने सीमा के पिता को एक लड़के के बारे में बताया,

सरकारी नौकरी, अकेला लड़का, यह सुनकर सीमा के पिता बहुत खुश हुए। इस खुशी में वह यह भी भूल गए कि वह लड़का उनकी बेटी से शादी करने को क्यों तैयार है। ये जानते हुए भी उसकी पहले से ही एक बेटी है।

सात वर्ष बीत चुके थे। इन सात वर्षों में सीमा समाज के तानों से इतना परेशान हो गई थी कि उसने भी बिना विचार किए शादी के लिए हाँ कर दी। लड़का अच्छा था और उसे उसकी पहली शादी या उसकी बेटी से कोई परेशानी नहीं थी। शादी के बाद सीमा ने देखा कि उसका पति हर महीने कुछ दिनों के लिए कहीं जाता है। शुरू में उसे लगा कि शायद काम के कारण उसे बाहर जाना पड़ता है। वह कोई भी त्योंहार उसके साथ नहीं मनाता था। सीमा ने बाद में दो बेटों को भी जन्म दिया। लेकिन पति ने जाना बंद नहीं किया। एक दिन सीमा ने बच्चों की कसम देकर पति से पूछा - आप कहाँ जाते हैं, मैं जानना चाहती हूँ। बार बार झूठ बोलकर सीमा का पति रमेश भी थक गया था। उसने फिर सीमा को बताया कि वह पहले से विवाहित है। उसकी पत्नी और तीन बेटे गाँव में रहते हैं। पहली पत्नी गाँव में मेरे माँ-बाप की सेवा करती है। मैं अकेला यहाँ शहर में रहता था। यह सब सुनकर सीमा बहुत रोई। उसने रमेश से कहा कि उसने उसे शादी से पहले सच क्यों नहीं बताया। रमेश ने कहा - उसने पहले ही सारी बातें तुम्हारे पिता को बता दी थी। मैंने तुम्हें कोई धोखा नहीं दिया। सीमा कभी सोच भी नहीं सकती थी कि उसके पिता उसके साथ इतना बड़ा विश्वासघात करेंगे। लेकिन जिंदगी के जिस पड़ाव पर वह खड़ी थी, वहां से वह ना तो पीछे जा सकती थी और ना ही कोई दूसरा रास्ता था। उसने इसे अपनी किस्मत समझते हुए स्वीकार कर लिया था। जीवन में हर-तरह के दिन देखने के बाद सीमा बहुत कठोर स्वभाव की हो गई थी। अपने लोगों से धोखा जो खाया था। हमारे समाज में सीमा जैसी कितनी लड़कियाँ हैं जो अपने साथ हुए अन्याय को अपनी किस्मत समझ लेती हैं। सीमा का संघर्ष जारी रहा। सीमा का शरीर कई बीमारियों का घर बन गया और एक दिन सीमा ने इस धोखेबाज दुनिया को छोड़ दिया।

विवाह एक ऐसा बंधन है जिसकी नींव प्रेम ओर विश्वास पर रखी जाती है। जब यह नींव ही हिल जाए, तो इस बंधन को टूटकर बिखरने में समय नहीं लगता है।

**प्रीती शर्मा**
**अतिथि रचनाकार**

# चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह के दृश्य

**कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा समारोह के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए श्री अनादि मिश्र, महालेखाकार**

**कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए श्री जय सिंह रैगर, वरिष्ठ लेखाधिकारी/कल्याण प्रकोष्ठ**

**कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह--2021 के अन्तर्गत झण्डारोहण करने एवं कार्यालय कर्मियों को सम्बोधित करते हुए श्री अनादि मिश्र, महालेखाकार महोदय**

**कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह--2021 के अन्तर्गत देशभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए श्री अमर सिंह राठौड़, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए अधिकारी एवं कर्माचारीगण**

# शिल्पकला का बेजोड़ खजाना 'आभानेरी'

भारतीय कला दर्शन है। कला शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में हुआ है। महामुनि भरत ने नाट्यशास्त्र में कला के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है-

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न साविधा - न सा कला।[1]"

अर्थात ऐसा कोई ज्ञान नहीं जिसमें कोई शिल्प नहीं, ऐसी कोई विद्या नहीं, जो कला न हो।

"मनुष्य की रचना जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है।"[2]

कला और संस्कृति के क्षेत्र में भारत की भूमि का कोई मुकाबला नहीं है। यहां पग-पग पर कला के रंग समय को भी यह इजाजत नहीं देते कि वे उसके अस्तित्व को गर्त में डाल सके। "अतिथि देवो भवः" वाले हमारे देश में कदम कदम पर ऐतिहासिक स्थल विजय स्तम्भ, महल, मीनारें, बावडियां, हर स्थल से जुडी पौराणिक गाथा, हरेक स्थान का धार्मिक महत्व आदि देखने या सुनने में आता है। इन स्थानों से लोगों को जोड़ने के लिए अनेकों राजाओं ने मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे एवं अन्य धार्मिक स्थान बनाये हैं। इन धार्मिक ऐतिहासिक स्थानों की उपस्थिति को अपने मन में बिठाकर लोग एक दूसरे का सम्मान करते हैं एवं अपने बच्चों को भी इस तरह की शिक्षा देते हैं। भारत की ऐसी ही वैभवशाली और पर्याप्त समृद्ध स्थापत्य कला के नमूने कहीं कहीं इतिहास के झरोखें से झांकते मालूम होते हैं। ऐसे ही कुछ नमूने राजस्थान के दौसा जिले में स्थित ऐतिहासिक स्थल आभानेरी में देखने को मिलते हैं।

ढुंढाड अंचल के प्राचीन कला केन्द्रों में आभानेरी एक विशेष स्थान रखता है। यह गुप्तकाल अथवा प्रारम्भिक मध्यकाल के दो कलात्मक और दुर्लभ ऐतिहासिक स्मारकों "हर्षद माता का मन्दिर" एवं "चांद बावडी" के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है। आभानेरी, राजस्थान के दौसा जिले में स्थित ऐतिहासिक ग्राम है। यह जयपुर से पंचानबे किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह छोटा सा ग्राम किसी समय राजा भोज की राजधानी रहा था। आभानेरी से प्राप्त पुरातत्व अवशेषों को देखकर यह कहा जा सकता है कि यह स्थान लगभग तीन हजार वर्ष तक पुराना हो सकता है। यहां से प्राप्त कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरावशेष अल्बर्ट हॉल म्यूजियम जयपुर की शोभा बढ़ा रहे हैं। साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों में इसके विषय में कोई विस्तृत एवं प्रमाणिक जानकारी नहीं मिलती। किन्तु जनश्रुति के अनुसार प्राचीन काल में इसे अभयनगरी (जहां के निवासी सदा निर्भय रहते हों) कहकर सम्बोधित किया जाता था। इसके नाम के संबंध में दूसरा मत भी प्रचलित है। यहां के प्रसिद्ध हर्षद माता के मन्दिर की आराध्य देवी प्रसन्न मुद्रा में प्रदर्शित की गयी है। जिसकी आभा से सुवासित यह प्रदेश आभा

नगरी कहलाया तथा कालान्तर में इसका आभानेरी नाम लोकप्रिय हुआ। इसका संबंध किसी राजा भोज से बताया जाता है। एक अन्य मान्यता के अनुसार आभानेरी निकुम्भ चौहानों की राजधानी थी। बाद में उन्होंने अलवर की स्थापना की। यहां के स्थानीय निवासी बताते हैं कि प्रसिद्ध राजा चंद ने इसे बसाया था। इस आशय का दोहा प्रसिध हैः

**"शहर गढी घर परगना अलवर गढ़ के पास ।**

**बस्ती राजा चंद की आभानेरी निवास ।।"** [3]

राजा चन्द ने आभानेरी में कई चमत्कृत कर देने वाले निर्माण कराये थे। जिनके स्थापत्य की आभा तुर्क आक्रमणकारी सहन नहीं कर पाये और खूबसूरत शिल्पों के टुकड़े टुकड़े कर दिये। आज भी शिल्प विद्या का चरम बयान करने वाले इन टुकडो पर उत्कीर्ण मूर्तियां और बेलबूटे एक साथ रूदन करते हैं और कभी हास परिहास करते नजर आते हैं। संयोग वियोग में भीगी यह कला रोती हुई सी मालूम होती है क्योंकि इसे लूटपाट कर तोडा गया और हंसती हुई सी इसलिए प्रतीत होती है कि आज के वैज्ञानिक और यांत्रिक युग में मशीन से भी ऐसे शिल्प गढना किसी के लिए भी आसान कार्य नहीं है। वर्तमान में यहां दो स्मारक अवशिष्ट हैं- हर्षद माता का मन्दिर और चांद बावडी।

**हर्षद माता का मंदिरः-**

जैसा कि नाम से ही विदित है कि हर्षद यानि हर्ष से, उल्लास से, यानि हर्ष एवं उल्लास की देवी को ही हर्षद माता नाम दिया है। कुछ अभिलेखों में हर्ष माता को हरसिद्धि माता भी कहा गया है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं का कहना है कि जो भी सच्चे मन से माता से अर्ज करता है, उसकी मन्नत पूरी होती है एवं उसे खुशी मिलती है। इस मन्दिर का निर्माण राजा चंद ने ही करवाया था। यह पूर्वाभिमुख मन्दिर महामेरू शैली में बना हुआ है। यद्धपि मन्दिर अपनी वास्तविक स्थिति में नहीं है। इसका मण्डप एवं गर्भगृह दोनों ही गुम्बदाकार छतयुक्त हैं। इसकी दीवारों पर देवी देवताओं व ब्राहमणों की प्रतिमाऐं बनायी हुई हैं जो कि अब क्षतिग्रस्त हो

चुकी हैं। यहां शिवपंचायत, हनुमान मन्दिर एवं अन्य बहुत से मन्दिर भी बने हुये हैं जो कि कला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। मन्दिर के गर्भगृह में कहीं पर भी सीमेंट एवं चूने का प्रयोग नहीं किया गया है जो कि भारतीय शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रदर्शित करता है। कभी मन्दिर में छः फुट की नीलम की हर्षद माता की मूर्ति हुआ करती थी। स्थानीय निवासी बताते हैं कि वह मूर्ति 1968 में चोरी हो गयी थी। ऐसी मान्यता है कि माता गांव के आने वाले संकट के बारे में पहले ही चेतावनी दे दिया करती थी जिससे स्थानीय निवासी सतर्क हो जाते थे एवं परेशानियों का बखूबी सामना कर लिया करते थे। ऐसा भी सुनने में आता है कि 1021 से 1026 के दौरान मौहम्मद गजनवी ने मन्दिर एवं उसके परिसर में तोडफोड़ की तथा मूर्तियों को भी क्षतिग्रस्त कर दिया था। वे खण्डित मूर्तियां आज भी मन्दिर एवं बावडी परिसर में सुरक्षित रखी हुई हैं। बाद में 18 वीं सदी में जयपुर महाराजा ने इसका जीर्णोद्वार करवाया था।

मन्दिर में दीवारों व स्तम्भों पर खण्ड़ित अवस्था में विभिन्न प्रकार की मूर्तियां उत्कीर्ण की हुई हैं। यथा- कृष्ण के शैशव से किशोरावस्था के दृश्य, योगनारायण मूर्ति, योगेश्वर विष्णु आयुधरहित, नटराज शिव, चारभुजाओं से युक्त देवी, तथा महिषासुर का युद वाराही की मूर्ति, गजलक्ष्मी की प्रतिमा, शिव पार्वती की प्रतिमा, सूर्य, महीषमर्दिनी के विभिन्न रूप, अर्द्धनारीश्वर, नृत्य करते शिव एवं भैरव, यक्ष, यक्षिणियों, शेषासिन विष्णु, समुद्रमंथन, नाग व नागिन, प्रेमालाप की विभिन्न मुद्राओं में प्रेमी युगल तथा अन्यान्य विषयों से सम्बन्धित प्रतिमाऐं प्रमुख हैं।

इन मूर्तियों में एक विशेष आकर्षण है जिसे देखकर दर्शक सहज ही खिंचा चला आता है। आज के मशीनी युग में इतनी बारीक नक्काशी करना कठिन है। उस समय की इन मूर्तियों व चित्रों में इतनी बारीक नक्काशी को देखकर हर किसी का आश्चर्यकित हो जाना स्वाभाविक है।

**चांद बावडीः-**

आभानेरी का दूसरा प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक चांद बावडी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। बावडी या बावली उन सीढीदार कुओं या तालाबों को कहते हैं जिनके जल तक सीढ़ियों के सहारे आसानी से पहुंचा जा सकता है। भारत में बावडियों के निर्माण और उपयोग का लम्बा इतिहास है। कन्नड में बावडियों को **कल्याणी** या **पुष्करणी**, मराठी में **बारव** तथा गुजराती में **वाव** कहते हैं। संस्कृत में प्राचीन साहित्य में इसके कई नाम हैं। यथा- वापी, दीर्घा, वापिका, कर्कन्धु, शकन्धु आदि। प्राचीन काल में बावडियों का विशेष महत्व रहा है। जलस्तर बढ़ाने व जल संरक्षण के लिए बावडियों का विशेष योगदान रहा है। पुराणों में बावडियों के महत्व को प्रदर्शित करते हुये दस कुओं के बराबर एक बावडी को माना गया है।

दश कूप समा वापी, दीपा वापी समो ह्रदः ।[4]

आभानेरी की चांद बावडी सीढ़ीदार कुआं है इस बावडी का निर्माण नवी शताब्दी में किया गया था। इस बावडी का प्रवेश द्वार उत्तरमुखी है। इसमें लगभग 3500 सकड़ी सीढ़ियां हैं और यह तेरह तल ऊंचा और सौ फुट या तीस मीटर गहरा है। यह अविश्वसनीय कुआं उस समय जल की कमी से जूझ रहे इस क्षेत्र की जल समस्या का एक व्यवहारिक समाधान था। चांदनी रात में दूधिया सफेद रगं की तरह दिखाई देने वाली यह बावडी अंधेरे - उजाले की बावडी नाम से भी प्रसिद्ध है। तीन मंजिली इस बावडी में राजा के लिए नृत्य कक्ष तथा गुप्त सुरंग बनी हुई है। इसके ऊपरी भाग में निर्मित परवर्तीकालीन मण्डप इस बावडी के लम्बे समय तक उपयोग में रहने का प्रमाण देता है। बावडी की तह तक पहुंचने के लिए लगभग 1300 सीढ़ियां बनायी गयी हैं जो अद्भुत कला का उदाहरण पेश करती हैं। यह वर्गकार बावडी चारों ओर स्तम्भ युक्त बरामदों से घिरी हुई है। यह 19.8 फुट गहरी है जिसके नीचे तक जाने के लिए तेरह सोपान बने हुये हैं। भूल - भूलैया के रूप में बनी इसकी सीढियों के बारे में कहा जाता है कि कोई व्यक्ति जिस सीढी से नीचे उतरता है वह वापस उसी सीढी से ऊपर नहीं आ सकता।

नवीं शताब्दी में निर्मित इस बावडी का निर्माण राजा मिहिरभोज, जिन्हें की चांद नाम से भी जाना जाता था, ने करवाया था और उन्हीं के नाम पर इस बावडी का नाम चांद बावडी पडा। यह बावडी मन्दिर के ठीक सामने है। मन्दिर के ठीक सामने होने का मतलब साफ है कि जो भी व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश करे, वह पहले अपने हाथ मुँह धोये, उसके बाद मन्दिर में प्रवेश करे और यही हमारे देश की संस्कृति भी है कि जो भी व्यक्ति किसी धार्मिक स्थल में प्रवेश कर रहा है उसका तन मन शुद्ध होना चाहिए। बावडी निर्माण से सम्बन्धित कुछ किवदन्तियां भी प्रचलित हैं- जैसे कि इस बावडी का निर्माण भूत प्रेतों द्वारा एक रात में किया गया और इसे इतना गहरा इसलिए बनाया गया कि इसमें यदि कोई वस्तु गिर जाये तो उसे वापस पाना असम्भव हो। इतना ही नहीं यह भी कहते हैं कि चांद बावडी, अलूदा की बावडी और भाण्डरेज की बावडी तीनों को ही एक रात में बनाया गया और ये तीनों सुरंग से एक दूसरे

से जुडी हुई हैं। इसकी सबसे निचली मंजिल पर बने दो ताखों पर महिषासुर मर्दिनी एवं गणेश जी की सुन्दर मूर्तियां भी इसे खास बनाती हैं। बावडी की सुरंग के बारे में भी ऐसा सुनने मे आता है कि इसका उपयोग युद्ध या अन्य आपातकालीन परिस्थितियों के समय राजा या सैनिकों के द्वारा किया जाता था।

वर्तमान में चांद बावडी एवं हर्षद माता मन्दिर दोनों ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन हैं जिन्हें विभाग ने चारों ओर से लोहे की मेड बनाकर संरक्षित किया है। साथ ही बावडी व मन्दिर से सम्बन्धित ऐतिहासिक जानकारियों के लिए बोर्ड भी लगाये गये हैं। सबसे अहम बात यह भी है कि यहां के निवासी भी पुरासम्पदा का महत्व समझते हैं एवं हर्षद माता की वर्तमान मूर्ति यहां के निवासियों ने ही प्रतिष्ठित करवायी थी। आभानेरी में प्रत्येक शरद नवरात्रि के समय तीन दिवसीय आभानेरी महोत्सव आयोजित किया जाता है। दशहरा से दस दिवस पूर्व अथवा दीपावली से 30 दिवस पूर्व प्रत्येक वर्ष आयोजित किये जाने वाले इस महोत्सव के अवसर पर यह चांद बावडी पर्यटकों के लिए तीन दिवस खुली रहती है। चांद बावडी देखने यहां अनेक पर्यटक आते हैं। वास्तव में यह भारत के उन चुनिंदी पर्यटन स्थलों में से एक है जहां देशी पर्यटकों की अपेक्षा विदेशी पर्यटक अधिक संख्या में आते हैं।

आभानेरी स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा नष्ट भ्रष्ट किये जाने पर भी आज भी इसकी चमक बरकरार है। हर्षद माता का मन्दिर व चांद बावडी दोनों ही स्थान पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। कोई भी व्यक्ति पहली बार जब चांद बावडी की सीढियों को देखता है तो आश्चर्यचकित हुये बिना नहीं रहता। हर्षद माता का मन्दिर जो मूल स्थिति में नहीं है, वह भी सभी को आश्चर्यचकित कर देता है। नक्काशी से युक्त पत्थरों से बना हुआ उसका गोल गुम्बद व दीवारों पर उकेरी गयी मूर्तियां सहज ही पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आभानेरी ग्राम अचानक उस समय राष्ट्रीय फलक पर उभर कर सामने आया जब यहाँ आसपास के क्षेत्र से तीसरी चौथी सदी के पुरावशेष पुरातत्व विभाग को प्राप्त हुये। जयपुर, दिल्ली व आगरा के स्वर्णिम त्रिकोण के बीच स्थित इस ऐतिहासिक स्थल पर दिनोंदिन पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

**संदर्भः-**

1. नाट्य शास्त्र, भरतमुनी, 1/116, 2. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीटा प्रताप, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या-3, 3. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीटा प्रताप, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या 553, 4. मत्स्यपुराण

**डॉ. नवल किशोर सेठी**

**अतिथि रचनाकार**

## फिर आयेगी भोर

मन मेरा संकल्पित हो,
भाव तेरे विचलित न हों,

छुटे न कोई छोर,

पथिक, फिर आयेगी भोर,

चलता चल, चलना है जिस ओर

गहन अंधेरे, तुझको घेरे

दुष्ट छलावे, तुझको छले

नहीं चलेगा, तिमिर का जोर

पथिक, फिर आयेगी भोर

पत्र में शूल चुभेंगे फिर भी

पथ में धूल मिलेगी फिर भी

मत हो जाना तुम कमजोर

पथिक, फिर आयेगी भोर,

छूना है आकाश तुझे

लक्ष्य रखना है खास तुझे

निर्णय लेने हैं तुझे कठोर

पथिक, फिर से आयेगी भोर

**वीरेन्द्र सिंह**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

# “माँ” तुझे प्रणाम

माँ शब्द की व्याख्या करना आसान नहीं है क्योंकि यह शब्द इतना विशाल है कि देव लोक के देवता भी छोटे पड़ते हैं। इतना ही नहीं, तीर्थंकर एवं इन्द्र भी उन्हें प्रणाम करते हैं। कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जहां इनकी गाथा नहीं गायी गयी है। वेद, पुराण, कुरान से लेकर बाइबिल इत्यादि हर ग्रंथ में माँ का दर्जा सबसे ऊंचा माना गया है। क्योंकि उसकी वाणी में संगीत का स्वर होता है और स्वर में ईश्वर का दर्शन होता है। अबोध बालक जब माँ बोलता है तो नारी का ममत्व जनंकृत हो जाता है, दुनिया की सारी खुशियां इस शब्द के आगे फीकी लगती हैं। बहुत ही सारभूत एवं गहरा शब्द है माँ।

वेदों में माँ को पूज्या, स्तुति योग्य एवं आह्वान योग्य माना है। महाभारत में यक्ष ने जब युधिष्टर से पूछा कि “भूमि से भी भारी कौन है?” तब युधिष्टर ने जवाब दिया “माता गुरूतरा भूमेः। अर्थात माँ इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती है। मनु ने तो यहां तक कहा है- दस उपाध्यायों के बराबर एक आचार्य, सौ आचार्यों के बराबर एक पिता और हजार पिताओं से अधिक गौरव एक माता का होता है। वेदों में प्रार्थना की गई है कि माँ रसमयी, स्नेहमयी और सन्तानों के हितार्थ समपर्ण करने वाली होती है। वह त्यागमयी, दयामयी, क्षमामयी, सत्यमयी और धर्ममयी होती है। वहीं ऋग्वेद में एक ऋचा में प्रार्थना की “जल के समान शुद्ध करने वाली माताएं हमारे अन्तः करणों को शुद्ध करें”। ऐसी कामना की है।

आदि शंकराचार्य कहते हैं- “कुपुत्रों जायते क्व चिदपि कुमाता न भक्ति”। अर्थात् पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। तैत्तिरीयोपनिषद में कहा है - “मातृ देवो भवः”। अर्थात माता देवी समान है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम, लंका जीतने के बाद राज्य सुख भोगने के प्रसंग में अनुज के प्रस्ताव को ठुकरा कर कहते हैं “जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी” अर्थात जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर होते हैं।

“मातृवान पितृमानाचार्यवान पुरूषों वेद” - कहता है इस संसार में तीन ही उत्तम हैं- शिक्षक, माता-पिता और गुरू, तभी मनुष्य मानव बनता है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं- वह संतान अति सौभाग्यशाली है जिनके माता-पिता धार्मिक और विद्वान हैं। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी अन्य से नहीं। इसलिए मातृमान वह होता है जिसकी माता गर्भधान से लेकर जब तक पूरा विधान हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे। जिसमें गर्भस्थ शिशु को अच्छे संस्कार मिल सके। जैसे सुभद्रा-अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को मिले।

माँ की महानता को इसाई धर्म में बताते हुए परमेश्वर पिता मूसा के माध्यम से दस हुक्म दिए थे जिसमें पांचवा हुक्म है “तू अपनी माता का आदर कर, जिससे तू दीर्घायु को प्राप्त करे।” (व्यवस्थाविवरण 5:16) अगर इंसान माता की सेवा करता है तो वह लम्बें समय तक जीवित रहता है। यशायाह 49:15 में पिता परमेश्वर कहते हैं, “क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पिए हुए बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे।” बाइबल के नीति वचन 23:22 में लिखा है, “अपने जन्माने वाले की सुनना और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाये तब भी उसे तुच्छ न जानना।” लेकिन आज जवान बच्चे माता को तुच्छ समझ कर उनका उपहास करते हैं। यह महा पाप है। माता का अपमान करने वालों के लिए नीति वचन 30:17 में बडी सख्ताई से लिखा है- “जिस आँख से कोई अपने पिता को अनादर की दृष्टि से देखे और अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को ताराई के कौवे खोद-खोद कर निकालेंगे।” इतना आदर माँ के प्रति बाइबल में लिखा गया है।

कुरान में लिखा है माँ के कदमों के तले जन्नत है। कुरान में सूरह अहफाफ आयत 15 में स्पष्ट किया है, “हमने इंसान को आदेश दिया है कि अपने माँ-बाप के साथ नेक बर्ताव करे। उसकी माँ ने बहुत कष्ट उठाकर उसे अपने पेट में रखा और बहुत तकलीफ उठाकर ही उसे जन्म दिया।” मुहम्मद साहेब से एक व्यक्ति ने पूछा, “इन्सानों मे मेरे अच्छे बर्ताव से सबसे ज्यादा हकदार कौन है- मुहम्मद साहब ने कहा “तेरी माँ।” फिर उसने पूछा, उत्तर मिला “तेरी माँ” फिर उसने पूछा इसके बाद कौन है, फिर कहा “तेरी माँ” फिर पूछा इसके बाद कौन है, फिर कहा तेरे पिता अर्थात हदीस की रोशनी में माँ का स्थान पिता के मुकाबले तीन गुणा ऊंचा है। मुहम्मद साहेब ने एक और हदीस में फरमाया “मै वसीयत करता हूँ इंसान को मां के बारे में कि वो उससे नेक बतार्व करे।” माँ का अनादर या उसकी बात न मानना और उन्हें कष्ट पहुंचाना बहुत बडा गुनाह है। यह इतना बडा गुनाह है कि ईश्वर की भक्ति और इबादत करने के बावजूद भी ऐसे व्यक्ति का जन्नत जाना बहुत मुश्किल होगा। एक हदीस मे उन्होंने कहा है “जन्नत मां के कदमों के नीचे है।”

मां के चरणों में जन्नत बसती है। मां के आंचल में संसार भर की खुशियां हैं। मां की गोद में बैठने के बाद जो सुकून मिलता है वह दुनिया में कहीं नहीं मिलता। संसार की सुन्दरता, मां की खूबसूरती के सामने तुच्छ है। मां तो ममता की देवी है इसलिए सन्तान के लिए माँ पहला मन्दिर है क्योंकि माँ में जन्मदाता के रूप में बह्मा, पालनकर्ता के रूप में विष्णु तथा विकास एवं उद्धार करने के लिए महेश, तीनो रूप समाहित हैं। अगर कोई माँ को देवी कहे तो देवी सिर्फ वरदान ही देती है लेकिन माँ ने तो सन्तान को जीवनदान दिया है।

इसलिए वह तो देवी से भी बड़ी है। मां की महिमा क्या करें, वह तो महिमा से भी ऊपर है और उसे उपमा भी क्या दें? क्योंकि 'उप' में भी माँ समाहित है। अगर कोई उसे सागर कहे तो उसका जल भी खारा है लेकिन माँ का दूध तो अमृत के समान मीठा है। अतः सागर भी उसके सामने फीका है। अगर उसे चन्द्रमा जैसे कहे तो उसमें भी दाग है लेकिन मां की ममता में कभी दाग नहीं होता। अतः चन्द्रमा भी उसके सामने बौना है। अगर कोई उसे सूर्य की उपमा दे तो सूर्य केवल दुनिया को रास्ता दिखाता है लेकिन मां केवल रास्ता ही नहीं दिखाती वरन् अंगुली पकड कर चलना भी सिखाती है। अतः सूर्य उसके आगे फीका है।

मां की ममता दस बच्चों में बंटकर भी खण्डित नहीं होती क्योंकि उसके हाथ जब भी उठते हैं वे ममता के ही होते हैं, क्योंकि वह मां है, ममता की भूख है। मां की खुशी तो इसमें है कि उसकी सन्तान सुखी रहे। बस सन्तान की आंखों में पानी होना चाहिए। मां का ध्यान बेटे के शरीर पर जाता है कि वह स्वस्थ है कि नहीं परन्तु पत्नी का ध्यान पति की कमाई पर जाता है जबकी दोनों स्त्री हैं।

मां के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते। कहते हैं कि ममता अपना मोल नहीं मांगती। अकबर के दरबार में टोडरमल ने मां का ऋण चुकाना चाहा लेकिन एक रात मां को सहन नहीं कर पाया। मदर्स डे पर बेटे मां को कुछ देना चाहते हैं पर क्या भौतिक वस्तुएं उस ममता का ऋण चुका सकती हैं, नहीं। मां हर समय दुआ मांगती है कि बच्चे सुखी रहें, उन्हें कष्ट न हो। ममता छीजती नहीं है।

मां के लिए कोई एक दिन निर्धारित नहीं हो सकता, तीन सौ पैंसठ दिन उसके लिए कम है। सदैव ध्यान रखने की बात है कि भूल से भी मां को धन्यवाद नहीं कहा जाये वरन उसका आभार प्रकट करे। तरीका चाहे कोई भी हो मां को तो उपहार भी नहीं चाहिए, क्योंकि जन्म देने के बाद वह सदैव देने की भूमिका में ही रहती है। चाहे वह आशीष ही क्यों न हो। मां के चरणों में सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा-

वो अहसास हो तुम जो कोमल लगता है।
वो स्पर्श हो तुम जो शीतल लगता है।।
तुम्हें पाकर ये जहां पा लिया मैंने।
तुम्हारे न होने से हर पल निरर्थक लगता है।।

**पदमचन्द गाँधी**

**(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**

# अपने - पराये

धड़ाम .....

ये कैसी आवाज है महेश बिस्तर से उठकर चौंकते हुए बोला।

जबाब में साथ उठकर बैठी उसकी पत्नी अनिता भी घबराहट में बोली, कहीं कोई चोर तो घर में नहीं घुस आया। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और दोनों तेज़ी से आवाज की दिशा में दौड़े। सबसे पहले नज़र दरवाजे खिड़कियों पर गयी, सब कुछ बंद था, अचानक उन्हें ध्यान आया अपने बेटे मोनू का ... दोनों उसके कमरे की तरफ दौड़े, मोनू वहां नहीं था। बाथरूम से पानी की हल्की सी आवाज सुनकर वे बाथरूम की ओर दौड़े, देखा तो मोनू नीचे बेहोश होकर गिरा हुआ था। उसके सिर से खून निकल रहा था, शायद टायलेट के लिए आया था और फिसलने से .... हे भगवान .. ये क्या हो गया....महेश, आप जल्दी से डॉक्टर को फोन कीजिए।

डॉक्टर .... मैं ... मैं तो यहां किसी डॉक्टर को नहीं जानता, अन्नू, भूल गयी हमें यहां आए अभी तीन महीने ही हुए हैं और ... ऊपर से ये समस्या, ऐसे में डॉक्टर ....

आप देखते नहीं इसके सिर से लगातार खून बह रहा है, मेरे बच्चे को बचा लीजिए।

अन्नू मैं क्या करूं, कुछ समझ नहीं आ रहा, हमारे पास कोई गाड़ी ...रुको किसी एम्बुलेंस को फोन करता हूं, कहकर महेश फोन करने लगा ....ये लोग फोन क्यों नहीं उठा रहे। अरे इस कोरोना महामारी के चलते सब ड्यूटी पर लगे हुए होंगे, आप कुछ कीजिए, अनिता ऑखों में आंसू लिए बोली। तभी खटखट खटखट दरवाजे से आवाज आई। महेश ने दौड़कर दरवाजा खोला। देखा तो दरवाजे पर उनके पड़ोसी सुभाष बाबू और उनकी पत्नी सरोज खड़ी थी

आप ....! हां, आपके घर से कोई आवाज आई थी, सब ठीक तो है हमें लगा कोई चोर वगैरह आ गया। सुभाष भाईसाहब, मेरा मोनू बाथरूम में स्लिप हो गया कहते हुए महेश का गला रुंध सा गया। क्या ....अरे तो उसे तुरंत अस्पताल लेकर चलिए महेश भाई, सुभाष बाबू ने अंदर आते हुए कहा। तब तक सरोज भी अन्नू और मोनू के नजदीक पहुंच गयी। मैं कैसे .... मेरे पास कोई गाड़ी नहीं और उस पर एम्बुलेंस वाले फोन नहीं उठा रहे है। तो आप किसकी राह देख रहे हैं, बताना चाहिए ना ... कहकर सुभाष बाबू मुड़े और सरोज को बोले मैं गाड़ी लेकर आया तब तक तुम भाभी के साथ मोनू को लेकर बाहर आओ।

कुछ ही पलों में कार स्टार्ट किए हुए सुभाष बाबू बोले, जल्दी करो आप लोग। गाड़ी में बैठकर तुरंत अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने एमरजेंसी देखते हुए तुरंत पेशेंट को एडमिट कर लिया और काउंटर पर जाकर पर्ची बनवाने को कह दिया। काउंटर वाले ने एडमिशन फीस पच्चीस हजार रुपए जमा करवाने को कहा।

जी पच्चीस हजार .... मगर मेरे पास तो फिलहाल पांच हजार ही हैं, कहते हुए महेश थोड़ा सा धीमी आवाज में बोला। कंधे पर हाथ रखते हुए सुभाष बाबू ने पर्स में से एटीएम कार्ड निकालकर काउंटर वाले को देते हुए कहा लीजिए और जल्दी कीजिए।

डॉक्टरों ने तुरंत इलाज शुरू कर दिया। बाहर बेंच पर बैठे हुए महेश और अनिता कभी एक-दूसरे को तो कभी चोर नज़रों से मेहश बाबू और उनकी पत्नी सरोज की और देखते .... रह-रहकर उन्हें बीते तीन महीनों में किए अपने बर्ताव स्मरण हो रहे थे। जब वह उस कॉलोनी में रहने आए थे तब उन्होंने अपने पड़ोसी सुभाष बाबू और उनकी पत्नी को दरवाजे से ही बाहर कर दिया था, कारण घर में पोंछा लगाया हुआ था और एक दिन जब मोहन बाबू ने रात को दरवाजा खटखटाया था गैस सिलेंडर के लिए तो घर में एक्सट्रा सिलेंडर होने पर भी उन्होंने ये कहकर की, नहीं है साफ इंकार कर दिया। असल में दोनों ये सोचते थे कि न जान न पहचान, ऐसे कैसे गैस सिलेंडर दे दें। फिर अभी पंद्रह दिन पहले उनकी बेटी गुडिया की शादी के वक्त घर की ग्रिल पर टेंट वाले को रस्सी न बांधने देना और उस दिन चाहते तो घर आए मेहमानों के लिए अपने घर में खाली पडा कमरा दे सकते थे पर .....और ये दोनों यहां इतनी रात में भी निस्वार्थ भाव से हमारे लिए हमारे बेटे के लिए ....

दोनों की आंखें नम थी तभी डाक्टर ने आकर कहा ... अब पेशेंट खतरे से बाहर है होश में है मिल लीजिए थोड़ी देर में ....

सबने राहत की सांस ली, मगर सुभाष बाबू और सरोज जी ने जब महेश भाई और उनकी पत्नी अनिता की ओर देखा तो दोनों की आंखों से अब भी आंसू बह रहे थे। अरे आप दोनों ....आपने सुना नहीं, मोनू ठीक है चलिए आंसू पोछिए, हमारा बच्चा ठीक है और अपनों का सबसे बड़ा हौसला अपने होते हैं। मोनू को मुस्कुराते हुए मिलेंगे तो वह जल्दी रिकवर होगा। चलिए मुस्कुराइए....। सुभाष भाई सरोज भाभी हमें माफ कर दीजिए। हमने आपके साथ इतना ग़लत व्यवहार किया और आज ऐसी मुश्किल घड़ी में अगर आप वक्त रहते मोनू को यहां .... कहते हुए महेश रो पड़ा। भूल जाइए महेश भाई वो सबकुछ। नहीं सुभाष बाबू .... आप हमें अपना समझते रहे और हम आपसे .... समझ नहीं आ रहा हमने ऐसा क्यों किया ? घमण्ड की वजह से...सुभाषबाबू ने मुस्कुरा कर कहा।

जी .... महेश भाई ने हैरानी से सुभाष बाबू की और देखते हुए कहा।

जी .... देखिए जैसे चश्मे पर ये घमंड जैसी धूल जमा होने पर हमें धुंधला दिखाई देता है ना, वैसे ही जब मन में तौल मौल और स्वार्थ और घमंड की धूल जमा हो जाती है ना, तो कुछ ऐसा ही होता है जैसे आपने किया .... मेरे दोस्त पड़ोसी अपने क्यों होते हैं जानते हो,

क्योंकि वो आपके पास मौजूद रहते हैं हरवक्त .... आपके अपने तो दूसरे शहरों में या अपने शहर में भी हो तो इतनी जल्दी आप तक नहीं पहुंच सकते जितनी जल्दी आपका पड़ोसी ....सब नज़र और नजरिए का खेल है मानों तो हम-सब अपने हैं और न मानों तो अपने भी पराए, मेरे भाई जहां स्वार्थ की धूल जमा होगी वहां हमेशा धुंधला ही दिखाई देता है चाहे वो रिश्ते हों या पड़ोसी, जरुरत बस धूल को साफ करने की होती हैं चश्मे से हो या दिलों से .... हमें अपने इगो को दूर रखते हुए सभी से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। पता नहीं, कौन कब काम आ जाए।

हम समझ गए सुभाष भाई साहब, सरोज भाभी ... और आपसे वादा करते हैं आगे से हमेशा अपनों के काम आएंगे वो भी निस्वार्थ भाव से बिल्कुल आप दोनो की तरह .....

ये हुई ना बात कहते हुए सुभाष बाबू ने महेश को तो वहीं सरोज ने अनिता को गले लगा लिया और सभी खुश नजर आ रहे थे।

**मीना कँवर**
**अतिथि रचनाकार**

राजभाषा नियम 7, कर्मचारी को आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करने तथा स्वयं पर तामिल किए जाने वाले आदेश, सूचना आदि हिन्दी में प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया" -डॉ. राजेंद्र प्रसाद

# अर्जी

इस दुनिया के पार भी दुनिया है क्या कोई,
यहां से रूख़सत होकर जहां चला जाता है हर कोई ।
क्या सुन पाते हो तुम मेरी बातें,
क्योंकि मुझ तक तो तुम्हारी कोई आवाज नहीं आती।
मांगती हूँ मैं कितने जवाब हर रोज,
पर शायद सवालों की फेहरिस्त तुम तक नहीं जाती।
क्या मेरा भी कोई टुकड़ा है वहां,
क्योंकि तुम्हारे ही साथ कुछ मर गया मेरा भी।
क्या एहसास होता है तुम्हें इस दुनिया का अब भी,
क्योंकि रखा है ना मैंने थोडा सा जिन्दा मेरे अंदर तुम्हें भी।
गर सच है ये कि मैं भी एक रोज,
इस दुनिया से उस दुनिया की हो जाउँगी।
तो ढूंढ लूंगी तुम्हें आकर वहां,
या शायद तुम्हें मेरे इन्तजार में खड़ा पाउँगी।
फिर बैठेंगे हम इक दूसरे का हाथ पकडकर,
तुम्हारी गोद में फिर मैं अपना सिर रख पाउंगी।
क्या रोक पाउंगी मैं अपने आंसू,
या तुम्हें भी अपने साथ ही रूलाउंगी।
बताउंगी तुम्हें किस्सा दर किस्सा लफ्ज दर लफ्ज,
जो तुम्हारे बिना यहां जिया मैंने।
बस मेरे वहां आने तक यूं ही सपनों में आया करो,
क्या उस दुनिया से कोई चिट्ठी यहां नहीं आ सकती तुम्हारी।
कहीं तो अर्जी लगाया करो।

**नेहा शर्मा**
**अतिथि रचनाकार**

## कभी तो ना भी कहें

माता-पिता, समाज हमें बचपन से ही विनम्र और आज्ञाकारी होना सिखाते हैं। उनकी नजर में सब कुछ आज्ञाकारी शिष्य की तरह हाँ कहकर सीखने वाला बच्चा ही अच्छा बच्चा होता है। ना कहने वाला बच्चा उद्दंड समझा जाता है। सामाजीकरण की यह प्रक्रिया सदैव बिना सोचे समझे हाँ कहने वाले बच्चे को समाज का एक प्रशंसित हिस्सा बनाती है। सत्य भी है कि इस तरह के मूल्यों का विकास समाज में बेवजह के तनावों को नियंत्रित करता है।

पर सदैव हाँ कहने की आदत हमारे सामाजिक जीवन को कुछ दोषपूर्ण भी बना देती है। किसी ने कहा भी है Don't say Yes If you want to say No अर्थात खुद की इच्छा के विरूद्ध हाँ मत कहिए। जीवन में ना कहने का साहस भी रखिये।

प्रत्येक स्थिति हाँ जैसी स्वीकार्य नहीं होती। अनेकों बार हमें लगता है कि ना कहना चाहिए पर कह नहीं पाते, लगता है जैसे मेरे ना कहने मात्र से ही कोई जलजला आ जायेगा। जहाँ बात आपके उसूलों, बुनियादी मूल्यों के विपरीत हो, जब बात आपके शोषण पर आ जाये, जब आपको प्रियजन किसी गलत मानसिकता का समर्थन करने को कहे तो वहाँ ना कहने का साहस रखें। वहाँ अपना नजरिया, अपने विचार स्पष्ट और दृढ़ रखें। वसीम साहब ने कहा भी है......

उसूलों पर जहाँ आँच आए टकराना जरूरी है,
जो हो गर जिंदा तो जिंदा नजर आना भी जरूरी है,

**राव जितेन्द्र प्रसाद**
**वरिष्ठ लेखापरीक्षक**

**"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।"** - विनोबा भावे।

# प्रतीक्षा

सीमा एक साधारण गृहणी थी। रोज की तरह सुबह उठकर भगवान का नाम लेकर दिन-प्रतिदिन के काम में लग जाती। भगवान ने दो खूबसूरत बच्चे दिये थे। दिन भर घर के काम मनोयोग से करती। सास-ससूर की खूब सेवा करती थी। शाम होते ही पति का इंतजार करती। पति की प्रतीक्षा में ही सारा दिन व्यतीत करती। शाम को दोनों पति-पत्नी घर गृहस्थी की बातें करते तत्पश्चात संध्या व्यतीत होने पर आस-पास कहीं भ्रमण करने चले जाते। इसी तरह खुशहाली में दिन व्यतीत हो रहे थे।

एक संध्या काल वह पति की प्रतीक्षा कर रही थी, परन्तु अचानक ही किसी अंजान व्यक्ति का फोन आया। वह किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत हो गई। उसके पति को हृदय की बीमारी के कारण तुरन्त ही आपात परिस्थिति में अस्पताल में भर्ती किया गया।

वह तुरन्त ही अस्पताल की तरफ दौड़ी। डॉक्टर ने कहा की बचने की आशंका बहुत ही कम है। परन्तु ऑपरेशन की व्यवस्था करनी पड़ेगी। सभी बातों से नितान्त अन्जान वह तुरन्त व्यवस्था में जुट गयी। उसके ऊपर तो मानो वज्रघात हो गया था। ऑपरेशन सफल रहा परन्तु डॉक्टर ने कहा, अभी अस्पताल से छुटटी नहीं मिल सकती है।

पति के हाथ-पैरों ने काम करना बंद कर दिया था। जप-तप, पूजा पा**ठ** सभी तरह के उपाय वह कर रही थी। एक महिना इसी तरह प्रतीक्षा में गुजर गया। परन्तु कुछ भी निष्कर्ष नहीं निकल रहा था। सब दिन अनहोनी की आशंका में व्यतीत हो रहे थे। सभी परिवारजन भी खूब साथ दे रहे थे। उसे लग रहा था कि क्या तमाम जीवन इसी तरह प्रतीक्षा मे व्यतीत होगा।

फिर एक ऐसा काला दिन भी आया जब उसकी दुनिया ही तबाह हो गई। उसे लग रहा था जैसे सब कुछ खत्म हो गया। पति चिरनिद्रा में सो गये।

क्या उसकी प्रतीक्षा अन्तहीन हो गई **?** क्या उसके जीवन में प्रकाश का अन्त हो गया। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर वह कभी नहीं खोज पाई। माना कि उसे जीना तो पड़ेगा, अपने लिए भी और अपने बच्चे और सास-ससूर के लिए। क्या जीवन का सारांश प्रतीक्षा में ही है।

**रूचि गुप्ता**
**लेखापरीक्षा लिपिक**

## कार्यालय द्वारा छः माही में राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्य का प्रगति प्रतिवेदन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कार्यालय आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रारूप द्विभाषी रुप (अंग्रेजी और हिन्दी) में जारी किए जाने चाहिएँ। वर्ष के दौरान कुल **08** कार्यालय आदेश द्विभाषी रूप से जारी किए गए।

राजभाषा विभाग (राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत) के अनुसार हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों **15,301** में से **8,127** पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। शेष पत्रों का उत्तर दिया जाना अपेक्षित नहीं था। वर्ष के दौरान अंग्रेजी में कुल 1,254 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 834 पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 100% एवं 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 65% पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। इन क्षेत्रों में कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल **26,918** पत्र भेजे गए जिनमें से हिन्दी में **26,698** पत्र एवं अंग्रेजी में मात्र **220** पत्र प्रेषित किए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा फाइलों में 'क' क्षेत्र में 75%, 'ख' क्षेत्र में 50% एवं 'ग' क्षेत्र में 30% टिप्पण हिन्दी में लिखे जाने अनिवार्य हैं। कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल **9,618** टिप्पण लिखे गए जिनमें से हिन्दी में लिखे गए टिप्पणों की संख्या **9,191** है जो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक है।

इस छः माही के दौरान कार्यालय द्वारा **197** निरीक्षण प्रतिवेदन हिन्दी में जारी किए गए। कार्यालय में यूनिकोड-इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड प्रशिक्षण व्यवस्था की स्थापना की गई व इस दौरान कुल **26** अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

इस छः माही में **02** हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल **27** कार्मिकों द्वारा भाग लिया गया। कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की **02** तिमाही बैठकों का आयोजन कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया एवं सभी सदस्य शाखाधिकारियों ने उक्त बैठकों में भाग लिया। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार **02** तिमाही हिन्दी संगोष्ठियों का भी आयोजन किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अन्तर्गत कार्यालय की वेबसाइट पूर्ण रूप से द्विभाषी एवं अद्यतन है।

दिनांक 14.09.2021 से 28.09.2021 तक कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कार्मिकों द्वारा शपथ ली गई एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह में लेखापरीक्षा व सम-सामयिक विषयों पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सोत्साह से भाग लिया एवं प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को तत्समय पुरस्कृत किया गया।

**हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूचीः-**

| क्र.सं. | प्रतियोगिता का नाम | प्रथम | द्वितीय | तृतीय |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हिंदी स्व-रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता | मनोज कुमार, एम.टी.एस. | कैलाश आडवानी, पर्यवेक्षक | हनुमान गुप्ता, सहायक लेखाधिकारी |
| 2. | हिंदी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता | संतोष बुला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी | अमित सिंघल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी | मोटा राम, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) |
| 3. | हिंदी लघु कथा लेखन प्रतियोगिता | शिवपाली खण्डेलवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी | रवि शंकर विजय, सहायक पर्यवेक्षक | रूचि गुप्ता, ऑडिट क्लर्क |
| 4. | हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता | चौधरी सरोज हनुमान, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) | अमित गोयल, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी | अनन्य पंवार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक |
| 5. | हिंदी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता | भावना शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी | अरूण खाण्डल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी | भगवान दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी |

## छः माही में अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

कार्यालय में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महालेखाकार महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

दिनांक 26.10.2021 से 01.11.2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। सभी कार्मिको द्वारा शपथ ली गई तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 16.11.2021 से 22.11.2021 तक लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह मनाया गया जिसके अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा विभागाध्यक्ष द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 16 दिसम्बर 2021 को कार्यालय में आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं कार्मिको को आपदा प्रबंधन से संबंधित विभिन्न प्रशिक्षण दिए गए।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में सरकार द्वारा जारी कोरोना दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन किया गया।

**श्री अरूण कुमार शर्मा**
**कल्याण अधिकारी**

## पाठकों के अभिमत

देश के विभिन्न कार्यालयों से पिछले अंक पर प्रतिक्रिया स्वरूप हमें सुधी पाठकों के जो अभिमत प्राप्त हुए, उनमें से कुछ पत्रों के अंश साभार प्रकाशित कर रहे हैं-

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का 15 वां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

**प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चेन्नै का कार्यालय**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 15 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रेरणादायक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) पश्चिम बंगाल, कोलकाता**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्ध वार्षिक पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 15 वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संग्रहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख राजभाषा संबंधित नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में बहुत ही उपयोगी तथा सहायक हैं जिससे राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सम्पर्क सूत्र तथा गौरव का अहसास होता है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर**

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिन्दी ई- गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 15 वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का प्रस्तुतीकरण एवं साज-

सज्जा आकर्षक है। श्री रवि शंकर विजय की कविता "खुशी का इंतजार" और श्री गुरू दयाल की रचना "जय जवान" हृदयस्पर्शी है। श्री एन के सेठी की रचना "उम्मीदों का दिया जलाएं" प्रेरणादायी है। श्री बद्री नारायण शर्मा द्वारा रचित लेख "ध्यान करने की विधि" मानसिक शांति हेतु ध्यान की आवश्यकता दर्शाती है। पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख व कविताएँ भी पठनीय व सराहनीय हैं। आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

**प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरू**

आपके द्वारा प्रेषित विभागीय अर्ध वार्षिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 15 वें अंक की प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का यह अंक भी पूर्व के अंको की भांति बेहद ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी, वो हैं - "कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप", "अवकाश नियम", "रामसर नामित आर्द्रभूमि", "कबीर साहेब", "स्वतंत्रता बनाम स्वच्छंदता" एवं "उम्मीदों का दिया जलाएं" आदि।

आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून**

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के सम्बन्ध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं समान रूप से उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। राजभाषा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के साथ-साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति को बल देना होता है जोकि आपकी पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से दृष्टिगोचर होती है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अति उत्तम हैं जिसके लिए लेखकों के अतिरिक्त संपादक मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों और हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "सुगंधा" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़**

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 15 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर नसीहत, दो घूंट पानी, सफलता का तट बांध है-“धैर्य”, कबीर साहेब, सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कायार्लयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को ओर निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) मध्य प्रदेश, भोपाल**

आपके द्वारा प्रेषित विभागीय अर्ध वार्षिक ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 15 वें अंक की प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री राजीव भाटिया, वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी का लेख “अवकाश नियम”, श्री रामानन्द शर्मा, (से. नि.), वरि. लेखापरीक्षक का लेख “नसीहत” तथा श्री मदन लाल कोली (से. नि.), वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना “हम भारत के लेखापरीक्षक” उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) महाराष्ट्र, नागपुर**

आपके कार्यालय द्वारा ई-मेल के माध्यम से प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 15 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। अपके कार्यालय की पत्रिका अत्यंत आकर्षक एवं मनोरम है। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियां और कविताएं पठनीय, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री राजीव भाटिया द्वारा लिखित लेख “अवकाश नियम”, श्री गुरू दयाल की कविता “जय जवान”, श्री बनवारी लाल का लेख “कबीर साहेब”, श्री रवि शंकर विजय की कविता “खुशी का इंतजार” आह्लादित करने वाली रचनायें हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**महानिदेशक लेखा परीक्षा (खान) का कार्यालय, कोलकाता**

# लेखापरीक्षा शब्दावली

| | | | |
|---|---|---|---|
| Amendment | संशोधन | Grant-in-aid | सहायतार्थ अनुदान |
| Audit entity | लेखापरीक्षा इकाई | Idle funds | अनुपयोगी निधियां |
| Bye - laws | उप विधि | Infructuous expenditure | निष्फल व्यय |
| Blocking of funds | निधियों का अवरोधन | Innovation fund | नवाचार निधि |
| Cash flow | नकदी प्रवाह | Monitoring | अनुश्रवण |
| Conversion charges | रूपान्तरण शुल्क | Note bene (N.b.) | ध्यान देवें |
| Competent authority | सक्षम प्राधिकारी | Overstatement | अधिकथन |
| Dubious payments | संदिग्ध भुगतान | Residual funds | अवशिष्ट निधियां |
| De jury | विधिवत | Subsidy | आर्थिक सहायता |
| Diversion of funds | निधियों का विपथन | Suo moto | स्वतः प्रेरणा |
| Embezzlement | गबन | Sine die | अनिश्चित काल के लिए |
| Follow-up action | अनुवर्ती कार्यवाही | Unproductive expenditure | अनुत्पादक व्यय |

- **टिप्पणियां हिंदी में लिखिए।**
- **मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।**
- **शब्दों के लिए अटकिए नहीं।**
- **अशुद्धियों से घबराइए नहीं।**
- **अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।**

## मैं हूँ भाषा हिन्दी

जननी है मेरी संस्कृत।
जगत को करती हूँ मैं अंलकृत।।
मैं हूँ दुनिया के मस्तक की बिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

दुनिया को मैंने भाईचारे का पाठ पढाया।
भेद भाव त्याग कर मानवता को अपनाया।।
उपयोग करते हैं मेरा, ईसाई, मुस्लिम और सिन्धी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

अंग्रेजी भाषा बनी रहती मेरी सहयोगी।
राष्ट्र निर्माण में बनती मैं कर्मयोगी।।
श्रृंगार में सुहागन की मैं माथे की बिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

सम्पूर्ण आर्यावृत है मेरा जन्म स्थान ।
स वसुदेव कुटुम्बकम ही है मेरी पहचान।।
विश्व युद्ध में भी मैं बनी रहती सदा कालिन्दी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

पहला अक्षर मेरा 'क' से कबूतर।
मुझसे मिलता सब के प्रश्नों का उत्तर।।
विश्व संस्कृति को रखती हूँ मैं जिन्दा।।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

मेरी भुजायें हैं स्वर और व्यंजन।
मात्रा और विराम है मेरे स्वजन।।
सब्जियों में सबको पंसद आती भिण्डी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिन्दी।।

लिपि मेरी है श्रेष्ठ देवनागरी।
मुझ से ही लिखा तंजुक ए बावरी।।
मेरी शान उपर बिन्दी आगे बिन्दी नीचे बिन्दी।
सच कहती हूँ मै हूँ भाषा हिन्दी।।

स्वर में मेरा अक्षर ‘अ’ से अनार।
उपयोग से जिसके होता नहीं कोई बीमार।।
मुझ में ही है आधा-पूरा अक्षर और बिन्दी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

सिकन्दर ने विश्व विजय का सपना संजोया।
महायुद्ध में उसने राष्ट्र प्रेम भी खोया।।
राजा पोरस को दोस्त बनाया बोलकर हिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

सम्राट अशोक को मैंने ही महान बनाया।
ह्रदय परिवर्तन कर बोद्ध धर्म अपनाया।।
बोद्ध ग्रन्थों का अनुवाद कराती हिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

सारी दुनिया में बसता है मेरा शरीर।
सदा आत्मा में रहता है भारत का नीर।।
रामायण, गुरूग्रन्थ, वेद, कुरान, का अनुवाद करती हिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

विश्व की भाषाऐं है मेरी बहने।
गीत, कहानियां, कविताऐं ही मेरे गहने।।
बाइबल, पुरान, गीता की भाषा हिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

आतंकवाद, साम्प्रदायिकता की रोक हिंदी।
सम्पूर्ण भारतवासी सदा बोलते है हिंदी।।
राष्ट्र प्रेमी मदन लाल कोली भी बोलता हिंदी।
सच कहती हूँ मैं हूँ भाषा हिंदी।।

**मदन लाल कोली**
**(से.नि.) लेखापरीक्षा अधिकारी**

लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करते हुए श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार महोदया एवं उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण